काश ! इनसे सीख ले उत्तराखंड

दूसरे राज्यों के मंत्रियों और अफसरों ने अपने अंदाज में किया काम

अमर उजाला ब्यूरो

- राज्य कंट्रोल रूम में बैठ कर कुछ न कुछ करते रहे
- महाराष्ट्र के स्थानिक आयुक्त ने खुद ही अपलोड किए नाम
- मंत्रियों ने आपदा कंट्रोल रूम से ही बनाए रखा संपर्क
- राज्य के आपदा सचिव ने नहीं ली कंट्रोल रूम की सुध

देहरादून। दूसरे राज्यों से आए मंत्रियों और अफसरों ने दिखाया कि आपदा के वक्त काम कैसे करना होता है। बुधवार को इन लोगों ने राज्य अतिथि गृह में आराम करने के बजाय कंट्रोल रूम में दिन गुजारना बेहतर समझा तो उत्तराखंड के आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव ने इसी कंट्रोल रूम की सुध तक नहीं ली।

बुधवार को महाराष्ट्र के स्थानिक आयुक्त ने तो खुद ही लैपटॉप संभाल रखा था। उनके मोबाइल पर मैसेज आ रहे थे और इनसे आयुक्त खुद ही लैपटॉप पर सचूनाएं अपडेट कर रहे थे। उनकी अंगुलियों की गति देखकर कहा जा सकता था कि वे लैपटॉप पर काम करने के अभ्यस्त भी हैं। गुजरात के आपदा प्रबंधन मंत्री ने खुद ही कंट्रोल रूम में बैठकर जानकारी हासिल करने की कोशिश की। इनके साथ आए अफसर भी फोन पर नाम पते नोट करते रहे। पश्चिम बंगाल और राजस्थान के मंत्रियों के बीच में बातचीत हुई तो मुद्दा आपदा में फंसे लोगों को सुरक्षित निकालने का ही रहा।

बेबस कंट्रोल रूम

कंट्रोल रूम सूचनाओं के मामले में अपडेट नहीं हो पा रहा है। दरअसल, कंट्रोल रूम के तीन में से दो फोन नंबर अब हैल्प लाइन नंबर के रूप में काम कर रहे हैं। लिहाजा, दोनों ही नंबर लगातार व्यस्त रहते हैं। कंट्रोल रूम जिलों से संपर्क करने के लिए वीसेट या फिर महज एक फोन नंबर के भरोसे हैं।

दूसरी ओर मंगलवार को कंट्रोल रूम में रहकर भी फोन पर या फिर अखबार पढ़ने में व्यस्त रहने वाले आपदा प्रबंधन सचिव भास्करानंद बुधवार को झांकने भी नहीं आए। बुधवार को कहा गया कि मीडिया की वजह से कंट्रोल रूम में दिक्कतें आ रही है। तय हुआ कि सचिव भास्करानंद सुबह 11 बजे और शाम चार बजे मीडिया को ब्रीफ करेंगे। ये ब्रीफिंग नहीं हुई। बाद में कहा गया कि जानकारी सूचना निदेशालय से मिलेगी। कंट्रोल रूम कोई जानकारी नहीं देगा। उत्तराखंड के सीएम और आपदा प्रबंधन मंत्री भी मंगलवार को ही चंद मिनट के लिए कंट्रोल रूम आए। उसके बाद से किसी भी मंत्री ने इस ओर आने की जहमत नहीं उठाई।

सहस्त्रधारा हेलीपैड में तीन दिन के बाद सूचनातंत्र तैयार करते पुलिसकर्मी।